B.A. II
Paper III

अशोक के स्तम्भ

Ashokan Pillar

काष्ठ स्तम्भों के निर्माण की परम्परा वैदिक युग से प्रचलित थी अशोक ने उन्हें पाषाण का रूप प्रदान कर उन्हें अमरत्व प्रदान किया। अशोक कालीन वास्तु स्तम्भों की पृष्ठभूमि में अशोक की प्रतिभा सतत् क्रियाशील थी। अपने साम्राज्य की सीमा निर्धारित करने तथा पवित्र बौद्ध स्थलों को चिरस्मरणीय बनाने के लिए उसने एक ही पाषाण खण्ड के तराशे गये स्तम्भों का प्रयोग किया। इन स्तम्भों को इस प्रकार से चमत्कृत किया गया है कि शताब्दियों के काल-लहर के पश्चात् आज भी अपने मूल रूप में दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर रहे हैं। अभी तक वैज्ञानिक परीक्षण से यह ज्ञान नहीं हो सका कि यह ओपक कैसे उत्पन्न किया जाता था।

अशोक ने लगभग 30 स्तम्भों की स्थापना की थी जिनमें 15 स्तम्भ पुरातत्वविदों को उपलब्ध हुए हैं। 10 स्तम्भ लेखयुक्त हैं किन्तु अन्य लेखहीन हैं।

1. **बखिरा सिंह शीर्षक स्तम्भ :→** स्तम्भों के शीर्ष पर पशुओं की स्थिति एवं उनकी रचना के आधार पर यह अशोककालीन प्राचीनतम स्तम्भ ज्ञात होता है। इस स्तम्भ पर सिंह अस्थिर मुद्रा में आसीन है।

2. **रामपुरवा का सिंह स्तम्भ :→** पूर्ण परिपक्व स्तम्भ वास्तु का प्रथम लक्षण रामपुरवा के स्तम्भ के सिंह शीर्षक में होता है इसमें लौरिया नन्दनगढ़ सिंह शीर्षक भाँति भाँति शीर्ष भाग के तीन प्रमुख अंग :- आधोमुख कमल, हंसपंक्ति युक्त वृत्ताकार चौकी तथा उस पर ध्यान मुद्रा में आसीन सिंह है। सिंह पूर्ण स्वाभाविक, गतिशील मुद्रा में बना है। जो रचना की दृष्टि से भी दोषमुक्त है। शारीरिक संतुलन एवं गतिशीलता में तो यह सारनाथ से भी मनोरम है।

Scanned with CamScanner

2. सारनाथ में इन गुणों के साथ ही ओजस्विता उद्घाटित की गई है। उसमें रूप सौन्दर्य एवं शारीरिक शक्ति का एक प्रशंसाजनक संगम प्राप्त होता है।

संकिसा का हस्ति शीर्षक:— इस स्तम्भ शीर्ष के तीन मुख्य अंग हैं। सर्वोपरि गज, उसके नीचे वृत्ताकार चौकी तथा उसके नीचे औंधा हुआ पद्म। चौकी को मध्य पट्टे की आकृति में पद्म पुष्प एवं ~~अमरबेल~~ लता से अलंकृत किया गया है। इस स्तम्भ को की शीर्षक कुछ अधिक विकसित है। किन्तु हस्ति की रचना में कोई लय एवं गति नहीं है। सामने के पैर तो जैसे स्तम्भ स्थिर कर दिए गए हैं। गजाकृति एवं स्तम्भ के ऊपर पद्म पुष्प एवं चौकी में भी कोई सामंजस्य नहीं है।

रामपुरवा का वृषभ-शीर्षक → इस स्तम्भ के शीर्ष पर निर्मित वृषभ की मूर्ति में मांसपेशिक शक्ति है किन्तु उसके ऊपर के नीचे का रिक्त भाग भी लहराती रेखाओं से भरा है उसके नीचे का रिक्त भाग भी लहराती रेखाओं से भरा है। उसके नीचे की वृत्ताकार चौकी तथा औंधे पद्म-पुष्प में अभी भी पूर्ण संलग्न नहीं है।

लौरिया नन्दनगढ़ सिंह शीर्षक → यह स्तम्भ अन्य स्तम्भों की अपेक्षा अधिक सुरक्षित है। इस शीर्ष भाग पर सिंह की मूर्ति परिष्कृत एवं हृदयग्राही है किन्तु सिंह की मुखमुद्रा, चरणों की स्थिति एवं अयालों के निरूपण में स्वाभाविकता की अपेक्षा रूढ़िवादिता ही है।

सारनाथ सिंह शीर्षक स्तम्भ:— अशोक कालीन मौर्य वास्तु की चरम परिणति सारनाथ के सिंह स्तम्भ में दृष्टिगत होती है। स्तम्भ का मूलभाग तो पूर्ववर्ती स्तम्भों की ही भाँति है। किन्तु शीर्ष भाग अपने लालित्य के लिए विश्वविख्यात

है।

मार्शल ने ठीक ही लिखा है कि "सारनाथ की शीर्ष मूर्ति यद्यपि अद्वितीय तो नहीं है तथापि ई०पू० तृतीय शताब्दी में विश्व में कला का जितना विकास हुआ था उसमें यह सर्वाधिक विकसित कलाकृति है। इसमें शिल्पी की पीढ़ियों का अनुभव प्राप्त था। सिंह अत्यन्त ही बलशाली है। इनकी शिराएं उन्नत है। मांस-पेशियों में गति है। फलक चित्रों एवं सिंहों की आकृति में पूर्ण स्पष्टता, प्रौढ़ता एवं मौलिकता है।

अशोक ने सारनाथ सिंह शीर्षक में अपना जीवन दर्शन ही आरोपित किया है। प्रथमतः यही ध्यानव्य है कि अशोक ने इस शीर्ष स्तम्भ को सारनाथ में स्थापित किया जहाँ से महात्मा बुद्ध ने अपना सन्देश प्रारम्भ किया था। इससे अशोक द्वारा सम्पूर्ण जनता को प्रदत्त संदेश का अनुमान लगाया जा सकता है। सिंह चक्रवर्ती सम्राट के प्रतीक है। धर्म चक्र अशोक की धर्म-विजय का स्मरण दिलाता है। चार पशु चार वर्णों या चारों दिग्पालों के प्रतीक है। जिनसे अशोक की आध्यात्मिक विश्व-विजय की कल्पना कर सकते है। इस प्रकार चौकी के पशु, सिंह एवं चक्र अशोक के व्यक्तित्व का ही निरूपण करते है जो एक धर्म विजयी शासक के प्रशासात्मक के प्रतीक है।

" There three things together represent the emotional integration of the personality of Ashoka himself who dedicated his life and his kingdom to the welfare of his through the ideal of Dhamma.

सौन्दर्यशास्त्र की दृष्टि से भी

अशोक का विख्यात सिंह शीर्षक अद्वितीय है। सिंहों के नीचे की वृत्ताकार पट्टी में एक डग भरता हुआ वृषभ उत्कीर्णित है। "जब बलवान वृषभ तीव्रता से डग भरता है। तो उसकी मांसपेशियों, शिराओं एवं हड्डियों में जो जो खिंचाव एवं बल पड़ता है उनका बड़ा ही वैज्ञानिक निरूपण इसमें हुआ है।"

अशोक के उपर्युक्त स्तम्भों एवं उसके शीर्षक के विवरण से यह प्रतिध्वनित होता है कि शिल्पकारों की मूलतः काष्ठकलाकार था। इस युग तक शिल्पियों का एक वर्ग वंशानुगत रूप में वास्तुकला में ही दीक्षित हो रहा था। अशोक के पूर्व से ही स्तम्भों पर पशु शीर्षक-स्थापित करने की परम्परा विद्यमान थी। प्रारम्भिक चौकोर, चौकी एवं पशु में कोई संतुलन नहीं है। चौकोर फलक के ऊपर पशु ऐसा प्रतीत होता था कि मानो उसे बिना किसी उद्देश्य के रख-रखाव किया गया हो किन्तु शनैः शनैः कलाकार में दक्षता की ओर अग्रसर होता रहा तथा चौकोर-चौकी के स्थान पर वृत्ताकार चौकी का निर्माण किया तथा शीर्षक-के पद चौकी एवं पशुओं में एकरसता स्थापित की गई है।

कलाकार मात्र सन्तुलन एवं सामंजस्य से ही सन्तुष्ट न था। उसने उसमें वैविध्य उत्पन्न करने के लिए चार-चार पशुओं को एक साथ चारों दिशाओं में मुख किए दर्शाया है। जब उसमें भी उसको मानसिक-परितोष न प्राप्त हुआ तो उसने चार संयुक्त पशु के ऊपर चक्र का भी निर्माण किया।

वास्तुकलाकार के अनवरत प्रयास के फलस्वरूप स्तम्भ चौकी एवं पशु शीर्षक में सम-सामंजस्य स्थापित हुआ तथा रूप एवं तकनीक की-

Scanned with CamScanner

दृष्टि से सभी अंग एक प्राण होते गये। सारनाथ एवं साँची के सिंह शीर्षकों में भारतीय सौंदर्य बोध तथा तत्कालीन सामाजिक आदर्शों का पूर्ण समावेश है जिस अभीष्ट की उपलब्धि के लिए कलाकार शताब्दियों से लगा था। मौर्ययुग में शासकों ने कलाकार को राजकीय प्रोत्साहन एवं संरक्षण प्रदान कर उसकी कलात्मक महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए स्वर्णिम अवसर प्रदान किया। कलाकार को यदि पूर्ण साधन न प्राप्त हो तो वह अपनी प्रतिभा का सम्यक् प्रदर्शन नहीं कर सकता। वैदिक युग से ही कलाकार अपने अनुभव, अभ्यास एवं प्रतिभा को मूर्त रूप देने के लिए प्रयत्नशील था। काष्ठ-उपादानों के माध्यम से अपनी अन्तरात्मा को कलाकृतियों के माध्यम से व्यक्त करने में पूर्ण समर्थ न था। मौर्यों ने पाषाण सा कठोर उपादान प्रदान कर तराशने में दृढ़ता का समावेश किया तथा उससे मानव की कोमल भावनाओं को व्यक्त करने में कलाकार ने सफलता प्राप्त की। एक हृदयहीन व्यक्ति के लिए ये पाषाण स्तम्भ हैं किन्तु एक सहृदय कलापारखी के लिए ये मौर्ययुगीन अखिल भारतीय साम्राज्य उच्च संस्कृति सर्वत्र शान्ति, गहन आध्यात्मिक एवं निर्मल सौन्दर्य भावनाओं के अगाध आगार हैं।

Scanned with CamScanner